Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR,
MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
Indian Philosophy (BA Part- I, Subsidiary)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lecture No. 26, Oct.
October 30, 2020

BA Part- I, Subsidiary

न्याय मत के अनुसार अनुमान की परिभाषा Part II

नैय्यायिक जयंत भट्ट ने न्यायमंजरी में अनुमान का लक्षण करते हुए कहा है कि "पक्ष सत्व आदि पाँच लक्षणों से युक्त हेतु के ज्ञान से व्याप्ति स्मरण के द्वारा उत्पन्न परोक्ष साध्य—विषयक ज्ञान ही अनुमति है। अनुमति का करण अनुमान है।" हेतु अथवा लिङ्ग के पाँच लक्षण इस प्रकार हैं— 1. पक्षसत्व, 2. सपक्षसत्व, 3. विपक्षासत्व, 4. अबाधितविषयत्व, 5. असत्प्रतिपक्षत्व। हेतु के इन पाँच लक्षणों में से किसी एक का भी अभाव होने पर 'सद् हेतु' न होकर हेत्वाभाष हो जाता है।

न्याय दर्शन में 'तत्पूर्वकम्' पद की वात्स्यायन प्रदत्त व्याख्या तथा जयंत प्रदत्त व्याख्याओं में भेद है। वह भेद मुख्यतः प्रत्यक्ष तथा स्मृति को लेकर है। वात्स्यायन जब यह कहते हैं अनुमान 'लिङ्ग-दर्शन या लिङ्ग-लिङ्गि-दर्शन' पर आधारित है, तो स्पष्टतः वात्स्यायन अनुमान को प्रत्यक्ष पर आधारित स्वीकार करते हैं।

दूसरी ओर जयंत जब अनुमान को 'लिङ्ग-लिङ्गि-सम्बन्ध की स्मृति' पर आधारित करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि जयंत के अनुसार अनुमान स्मृति पर आधारित होता है। ध्यातव्य है की स्मृति और प्रत्यक्ष में भेद है। इस स्थिति में प्रश्न है कि अनुमान का आधार क्या है— प्रत्यक्ष अथवा स्मृति? शब्दांतर से, अनुमान की परिभाषा में प्रयुक्त तत् शब्द किसका संकेतक है- प्रत्यक्ष का अथवा स्मृति का?

इस प्रश्न का उत्तर भी अनुमान की जयंत प्रदत्त व्याख्या में ही मिलता है। जयंत के मतानुसार 'तत्' शब्द सर्वनाम है, अतः यह 'प्रत्यक्ष' को भी संबोधित कर सकता है तथा मृत्यु को भी। किंतु यहाँ 'तत्' शब्द मुख्यतः 'प्रत्यक्ष' को ही संबोधित करता है क्योंकि अनुमान में व्याप्ति (लिङ्ग-लिङ्गि) संबंध की स्मृति का भी स्थान है तथा लिङ्ग-दर्शन का भी स्थान है। चूंकि अनुमान में व्याप्ति की भूमिका लिंग दर्शन के पश्चात ही प्रारंभ होती है, अतः अनुमान का साक्षात कारण प्रत्यक्ष ही है। जयंत के मतानुसार लिङ्ग-लिङ्गि के संबंध की स्मृति तो लिङ्ग-दर्शन के पश्चात ही होती है, अतः अनुमान में प्रत्यक्ष की भूमिका प्राथमिक है

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

तथा स्मृति की भूमिका परवर्ती है। अनुमान की परिभाषा में 'तत्' पद प्रत्यक्ष का ही बोधक है। इस प्रकार जयंत अनुमिति को प्रत्यक्ष और स्मृति दोनों पर आधारित बतलाते हैं।

नव्य न्याय के प्रणेता गंगेशोपाध्याय ने अपनी ख्यातिलब्ध्य ग्रंथ तत्व चिंतामणि में अनुमान का लक्षण स्पष्ट करते हुए कहा है कि *"व्याप्ति विशिष्ट पक्षधर्मता ज्ञान से उत्पन्न होने वाले ज्ञान को अनुमति तथा अनुमति के करण को अनुमान कहते हैं। अनुमान लिङ्ग विषयक परामर्श ही है, परामृश्यमान लिङ्ग नहीं।

तर्कभाषा के प्रणेता केशव मिश्र के अनुसार लिङ्ग परामर्श को अनुमान कहा जाता है। पुनः लिङ्ग तथा परामर्श को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि व्याप्ति के बल पर जो अर्थ का बोध होता है उसे लिङ्ग कहते हैं, जैसे धूम्र अग्नि का लिंग है। पुनः जहाँ धूम्र है वहां अग्नि है— इस प्रकार के सहचर्य नियम को व्याप्ति कहते हैं। धूम्र या लिंग का तृतीय ज्ञान 'परामर्श' है। धूम्ररूपी लिङ्ग के तीन ज्ञानों की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि पाठशाला में अग्नि के भूयो-भूयः (बार-बार) सहचार दर्शन से 'वन्हिव्याप्यो धूम्र'— इस आकार का वन्हि (अग्नि) के व्याप्त रूप में धूम्र का जो ज्ञान होता है उसे धूम्र का प्रथम ज्ञान समझना चाहिए। अर्थात्, जितनी बार देखने से उक्त व्याप्ति का निश्चय होता है उन सभी दर्शनों को लिङ्ग का प्रथम दर्शन या प्रथम ज्ञान समझना चाहिए। लिङ्ग का प्रथम ज्ञान होने के पश्चात दूर से पर्वत आदि पर धूम्र रूपी लिङ्ग का जो दर्शन होता है वह लिङ्ग का द्वितीय ज्ञान है। लिङ्ग के इस द्वितीय ज्ञान से लिङ्ग के प्रथम ज्ञान द्वारा उत्पन्न किए गए व्याप्ति विषयक संस्कार का उद्बोधन होता है। इस कारण 'धूमो वन्हिव्याप्तः' इस आकार में व्याप्ति स्मरण होता है। 'धूमो वन्हिव्याप्तः' इस व्याप्ति स्मरण के 'अनन्तर वान्हिव्याप्यधूमवान् अयं पर्वतः' इस आकार में पर्वत के साथ वान्हि व्याप्त धूम के संबंध का जो ज्ञान होता है उसे लिङ्ग का तृतीय ज्ञान कहते हैं। लिङ्ग का तृतीय ज्ञान ही परामर्श है। यह परामर्श ही अनुमति की उत्पत्ति में करण बनता है। इस प्रकार तृतीय ज्ञान अथवा लिङ्ग परामर्श की उत्पत्ति के तत्काल पश्चात अनुमिति होती है। तर्कसंग्रह के रचयिता अनमभट्ट ने भी परामर्श से उत्पन्न ज्ञान को अनुमति तथा उसके करण को अनुमान कहा है।